एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

फिग (अंजीर – *फिकस कैरिका*): नागौर और पश्चिमी राजस्थान में खेती, महत्व और संभावनाएं

*तनुज सांखला[1] एवं रिद्धि सिंह चौहान[2]
[1]एम.एससी., उद्यानिकी (फल विज्ञान), COA, नागौर (AU, जोधपुर), राजस्थान
[2]एम.एससी. उद्यानिकी, MJRP यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sankhlatanuj24@gmail.com

भारत की कृषि परंपरा हजारों वर्षों पुरानी है, जिसमें फल एवं औषधीय पौधों का विशेष स्थान रहा है। इन्हीं प्राचीन फसलों में अंजीर (*Ficus carica*) एक अत्यंत महत्वपूर्ण फल फसल है, जिसे मानव सभ्यता की सबसे पुरानी ज्ञात फल फसलों में से एक माना जाता है। संस्कृत साहित्य में अंजीर को उदुम्बर या परीक्षा के नाम से जाना गया है। ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में इस वृक्ष का उल्लेख स्वास्थ्य, समृद्धि और दीर्घायु के प्रतीक के रूप में मिलता है। आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में अंजीर को कब्ज निवारण, पाचन सुधार, रक्त शुद्धि तथा त्वचा रोगों के

उपचार हेतु उपयोगी बताया गया है। प्राचीन काल में अंजीर का प्रयोग भोजन के साथ-साथ औषधि और धार्मिक अनुष्ठानों में भी किया जाता था। वर्तमान समय में, जल संकट और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच अंजीर एक ऐसी फल फसल के रूप में उभरी है, जो शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयुक्त है। पश्चिमी राजस्थान और नागौर जैसे क्षेत्रों में इसकी खेती किसानों के लिए नई आर्थिक संभावनाएँ प्रस्तुत कर रही है।

अंजीर का पोषण एवं औषधीय महत्व

अंजीर पोषक तत्वों से भरपूर फल है। इसमें कैल्शियम, आयरन, पोटेशियम, मैग्नीशियम, प्राकृतिक शर्करा, आहार रेशा (फाइबर) और एंटीऑक्सिडेंट पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। नियमित सेवन से हृदय स्वास्थ्य में सुधार होता है, हड्डियाँ मजबूत होती हैं, पाचन क्रिया बेहतर होती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसकी उच्च फाइबर मात्रा रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में सहायक होती है, जिससे यह मधुमेह रोगियों के लिए भी उपयोगी माना जाता है।

जलवायु की आवश्यकता

अंजीर की खेती के लिए गर्म एवं शुष्क जलवायु सर्वोत्तम मानी जाती है। यह पौधा उच्च तापमान सहन करने की क्षमता रखता है, जिससे यह रेगिस्तानी एवं अर्ध-रेगिस्तानी क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

- आदर्श तापमान: 15°C से 40°C
- वार्षिक वर्षा: 50–75 सेमी
- शुष्क मौसम फल पकने के लिए अनुकूल

अत्यधिक वर्षा, अधिक आर्द्रता और पाला अंजीर की फसल की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।

मिट्टी की उपयुक्तता

अंजीर विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकता है, परंतु बेहतर उत्पादन के लिए:
रेतीली दोमट या दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है
मिट्टी में जल निकास अच्छा होना चाहिए
pH मान 6.5 से 8.0 के बीच होना चाहिए
पश्चिमी राजस्थान की मिट्टी अंजीर की खेती के लिए विशेष रूप से अनुकूल है।

प्रमुख किस्में

पश्चिमी राजस्थान एवं नागौर जिले में निम्नलिखित किस्में सफल पाई गई हैं:

- ❖ डायना – अत्यधिक सूखा सहनशील, उच्च उपज
- ❖ ब्राउन टर्की,ब्लैक मिशन,स्मिर्ना,कैपरी अंजीर

डायना किस्म शुष्क परिस्थितियों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करती है, जबकि ब्लैक इस्चिया किस्म नागौर एवं जोधपुर क्षेत्रों में लोकप्रिय हो रही है

रोपण एवं प्रवर्धन विधि

अंजीर का प्रवर्धन मुख्यतः कठोर लकड़ी की कलमों द्वारा किया जाता है। मानसून का समय (जुलाई) रोपण के लिए सर्वोत्तम माना जाता है।

- ❖ पौध दूरी: 5 × 5 मीटर
- ❖ गड्ढे का आकार: 60 × 60 × 60 सेमी

गड्ढों में मिट्टी एवं सड़ी हुई गोबर खाद (FYM) मिलाकर भराई की जाती है
स्वस्थ एवं रोगमुक्त कलमों से पौधों की बेहतर स्थापना और वृद्धि होती है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

अंजीर के पौधों की अच्छी वृद्धि और अधिक उपज के लिए संतुलित पोषण आवश्यक है।
पौधों की आयु के अनुसार FYM, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश का प्रयोग किया जाना चाहिए।

पौधे की उम्र	FYM (Kg)	यूरिया (जी)	सुपर फॉस्फेट (जी)	पोटाश (जी)
1-3 साल	20	50	200	20
4-7 साल	20	75	300	75
8 + वर्ष	20	100	400	100

जिंक और बोरॉन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व फलों की गुणवत्ता, आकार और रंग सुधारने में सहायक होते हैं।

सिंचाई प्रबंधन

अंजीर एक कम पानी में उगने वाली फसल है। युवा पौधों को गर्मियों में 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। परिपक्व पौधों की सीमित सिंचाई की जाती है| अधिक पानी से फूल झड़ने की संभावना होती है ड्रिप सिंचाई प्रणाली जल संरक्षण एवं उत्पादन दोनों के लिए लाभकारी है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

अंजीर में प्रमुख रूप से स्केल कीट का प्रकोप देखा जाता है, जो कोमल शाखाओं से रस चूसकर पौधे को कमजोर करता है। समय पर कीट नियंत्रण उपाय अपनाने से फसल को सुरक्षित रखा जा सकता है।
नियंत्रण के उपाय: क्विनालफोस 1.5%, डी इमेथोएट 1.5 मिली प्रति लाइट आर पानी।

फलन, कटाई एवं उपज

अंजीर में जुलाई माह में फूल आना प्रारंभ होता है। फल लगभग चार महीनों में पककर तैयार हो जाते हैं।
कटाई का सही समय तब होता है जब फल हल्के पीले रंग के और थोड़े नरम हो जाएँ।

- ❖ तीसरे वर्ष उपज: लगभग 5 किग्रा प्रति पौधा
- ❖ पाँचवें वर्ष से: 12–15 किग्रा प्रति पौधा

❖ अनुमानित आय: ₹5–6 लाख प्रति हेक्टेयर

ताजे एवं सूखे दोनों रूपों में अंजीर की बाजार में अच्छी मांग है।

नागौर एवं पश्चिमी राजस्थान में संभावनाएँ

कम वर्षा, उच्च तापमान और सीमित जल संसाधन वाले क्षेत्रों में अंजीर जैसी सूखा-सहिष्णु फसल किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकती है। कम लागत, कम सिंचाई और उच्च बाजार मूल्य इसे आर्थिक रूप से सशक्त विकल्प बनाते हैं।

निष्कर्ष

अंजीर की खेती नागौर एवं पश्चिमी राजस्थान के लिए एक टिकाऊ, जलवायु-अनुकूल और लाभकारी कृषि विकल्प है। यह न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि सतत कृषि और जल संरक्षण को भी बढ़ावा देती है। उचित तकनीकी मार्गदर्शन और सरकारी सहयोग से अंजीर की खेती इस क्षेत्र में कृषि विकास की नई दिशा प्रदान कर सकती है।